राजपूताने के लोक–गीतों एवं लोक–कहावतों में सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

*डॉ. सुरेश कुमार

लोक साहित्य जन की मौखिक अभिव्यक्ति होती है। यह साहित्य ज्ञान की चेतना, संस्कार एवं शास्त्रीयता से लगभग शून्य होता है। यह किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर, परम्परागत मौखिक क्रम से, यह अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भवि य में गमन करता है। इसमें उसे क्षेत्र के सम्पूर्ण जन–मानस की प्रवृतिया समाई होती है। यह साहित्य उस प्रदेश के जन–जन के कण्ठों पर प्रतिष्ठित है तथा समय–समय पर यह लिपिबद्व भी होता रहा है। लोक साहित्य में किसी समाज का प्रकृत, पवित्र एवं प्रशस्त रूप मिलता है। मानव जीवन के थोथे आदर्शो से परे हृदय के भावों की सहज अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य है। लोक साहित्य की विधाओं में लोकगीत, लोककथाओं, लोक गाथाओं (पवाड़े), लोक नाट्यों (ख्याल), लोक–कहावतों, पहेलियों, पड़ों आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण सम्मिलित है।

राजपूताना सूखा और अकाल के क्षेत्र के रूप से भलीभांति जानते है। यहॉ पर पानी की कमी, कम पैदावार, विकास के लिहाज से पिछड़े लोग एवं पिछड़ा इलाका है। अभावों से ग्रस्त यहॉ के सामान्य जन का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन बहुत ही कठोर है। लेकिन यहॉ के लोगों ने अपने जीवन को इन परिस्थितियों के अनुसार सहज बना लिया है जिसकी अभिव्यक्ति लोक–गीतों एवं लोक–कहावतों में मिलती है। राजपूताने के लोक–गीतों की भावभूमि बड़ी व्यापक है। जीवन का शायद ही ऐसा पहलू हो जिस पर राजस्थानी लोक–गीत न हो। राजस्थानी लोक–गीतों में व्यक्ति का पारिवारिक जीवन, मानव का प्रकृति के साथ सम्बन्ध उसके धार्मिक जीवन की भी झलक दिखाई देती है। जिसमें सूरज चॉद, तारे उसके गीतों के मुख्य उपकरण है। वे लोक जीवन की करूणा और सरस अभिव्यक्ति के सबल माध्यम बनकर लोकगीतों में अवतरित हुए है–

"सूरज उगे, सूरज राज मोडो सो उग ज्याय
हॉ, हो राजा, मोडो सो उग जाय
चढती बाई ने होसी सामो तावडो।"

भावार्थः पुत्री ससुराल के लिए विदा हो रही है। मॉ को यह डर है कि धूप में बेटी परेशान हो जायेगी। अतः मॉ सूरज राजा से प्रार्थना करती है कि– हे सूरज राजा। तनिक विलम्ब से निकलना मेरी दूधोन्हाई बेटी आज ससुराल जा रही है, सामने रहे तो धूप हो जायेगी। इस लोक–गीत के माध्यम से मॉ के बेटी की विदाई के समय सामाजिक दायित्व का वर्ण प्राप्त होता है।2

राजपूताने के आम जन के रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेश–भूशा, खान–पान, मूल्य–विश्वास, देवी–देवताओं, पर्व उत्सव आदि लोक गीतों में अभिव्यंजित होकर राजपूताने की सस्कृति को परिभा ित करती है। लोक–गीतों में सर्वाधिक संख्या संस्कारों, त्यौहारों तथा परिवार की स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले गीतों की है। उदाहरणार्थ– सगाई गीत, बंधावा गीत, चाकभात गीत, रतजगा गीत, हल्दी गीत, घोडी गीत, बना–बनी वर निकासी गीत, तोरण–गीत, हथलेवा गीत, कंवर कलेवा गीत, जीमणवार गीत कॉकणडोरा गीत, जला गीत आदि–

"घोड़ी म्हारी चन्द्रमुखी, इन्द्रलोक सुऑई ओ राज" (घोडी गीत)

यह गीत वर निकासी के समय घुड़–चढी की रस्म के समय घर की स्त्रियों द्वारा गाया जाता है।

"बनड़ो उमायों ए बनी ये थारै कारणै।

जोड़ी को उमायो ए बड़ गौतन थारै रूप नै।"

यह गीत विवाह से पूर्व पाट–बिठाई की रस्म के पश्चात वर–वधु की प्रेमाकांक्षा की व्याख्या से सम्बन्धित है। जिसमें वर वधु के भावी जीवन के लिए शुभकामनाएँ भी निहित है।

"म्हैं तो थारा डेरा निरखण आई ओ

म्हारी जोडी रा जला।"

वर के बारात का डेरा देखने के लिए जब वधु–पक्ष के घर की स्त्रियां जाती थी। उस समय यह 'जला' गीत गाया जाता है।

"होलर जाया ने हूई छै बधाई

थे म्हारा वंश बदाये रे अलबेली जच्चा।"

यह लोक गीत जच्चा लोकगीत है जो बालक के जन्म के समय गाया जाता है उनमें प्रायः गर्भिणी की प्रशंसा, वंशवृद्धि का उल्लास और शिशु के लिए मगंलकामना की जाती है।3

मध्यकालीन राजपूताने में त्यौहार के समय गाये जाने वाले लोक गीतों में यहॉ के लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की झलक दिखाई देती है। उदाहरण–

गणगौर त्यौहार पार्वती माता से सम्बन्धित है जिसकी पूजा कर विवाहित स्त्रियॉ सौभाग्य का वर पाना चाहती है। इसका सबसे प्रसिद्ध लोक गीत इस प्रकार है–

"खेलण दो गणगौर भंवर म्हानें खेलण दो गणगौर

म्हारी सखिया जोवे बाट हो भंवर म्हाने खेलण दो गणगौर"

इस अवसर पर स्त्रियां रंग–बिरंगे लहरियों (राजस्थानी–स्त्रियों की पोशाक) से सुसज्जित होकर 'घूमर नृत्य' करती है–

"म्हारी घूमर छै नखराली ए मा गौरी घूमर रमवा म्हे जास्या।"

इसमें लडकियां एवं विवाहित अपने परिवार वालों से जिद करती है कि मेरा लहंगा (घूमर) रंग–बिंरगा बहुत ही सुन्दर है। इसलिए मैं घूमर नृत्य अवश्य करूंगी। आप हमें इसकी स्वीकृति दे। अतः स्त्रियों को घर से बाहर जाने के लिए परिवार की स्वीकृति आवश्यक थी।

म्हारी गोरबन्द नखरालो, लडलीलूमॉ झूमाएँ

म्हारी गोरबन्द नखरालों

गोरबन्द लोक–गीत के माध्यम से मध्यकालीन राजपूताने की स्त्रियों के श्रृंगार को सम्बन्धित आभूषणों की जानकारी प्राप्त होती है। राजपूताने में स्त्री श्रृंगार सुहागन की पहचान समझा जाता है। श्रावण की तीज में स्त्रॅिया अपना पूरा श्रृंगार कर अपने पति की दीर्घ आयु की प्रार्थना करती है।4

आई आई सावणिया री तीज गौरी ओ।
रमबा नीसरया जी म्हारा राज।।

मध्यकालीन राजपूताने का आर्थिक जीवन पूर्णरूप से कृषि पर निर्भर था। कृषि निशिचित रूप से वर्षा पर निर्भर थी। राजपूताने में वर्षा की कमी एवं बालू मिट्टी से उपज कम होती थी। अतः काल एंव सूकाल मानव जीवन की आर्थिक दशा को प्रभावित करता था। इसी परिदृश्य में मानव ने काल एवं सूकाल की संभावनाओं को लोक–कहावतों में वर्णित किया है। पीढी–दर–पीढी ये लोक–कहावतें दोहों के रूप में आज भी लोगों के कंठ से प्रस्फुटित होती रहती है। हवा, चॉद, तारों एवं बादलों की परिस्थितियों के आधार पर काल–सुकाल की संभावानाओं का पता लगाया जाता था।5

उदाहरणार्थ–

लोक कहावतों में काल की संभावनाएँः

"दिन ने तपे तावडा, राते ठण्डा बाव

भिये कहे रे भड़ली, ऐ काळो रा सभाव" ।6

भावार्थः दिन में भंयकर गर्मी पडती है। रात को ठण्डी हवा चले, तो यह अकाल पड़ने के सकेंत है।

"मिरगा नाव न बाजियो, रोहिणी तपी न जेठ।

कै न बांधे झूपडो, बेठो बड़लो हेठ।"

भावार्थः जयेष्ठ महिने में मिरग नक्षत्र के दिन अगर हवा न चले और रोहिणी नक्षत्र के दिन तेज धूप न हो, तो झोंपड़े आदि बनाने की आवश्यकता नहीं होती है। पेड़ों के नीचे बैठकर भी समय निकाला जा सकता है। क्योंकि वर्षा नही होंगी तथा उस वर्ष पूर्ण अकाल की संभावना है।

गाजै बाजै करे डंकाल, वायु लंकाउ दूध उफाण।

रंग रूप जै घणा जतावै, तो यूं ग्वालयों काळ बतावे ।8

भवार्थः आकाश में बादलों की भंयकर गर्जना हो, बिजलिया जोर से चमके, बादल कई रंग रूप में हो, तथा हवा का रूख दक्षिण दिशा की तरफ से हो तो पशु चराने वाला ग्वाल यह संभावना व्यक्त करता है कि इस वर्ष सुनिश्चित रूप से काल पड़ेगा।

"दीपमाल का दीवा बुझावै, होली झल उत्तर दिस जावै
आसाढी पून्यू दखणी बाव तो अन्नबिकेगा मूंगे भाव।"9

भावार्थः यदि दीपावली में दीपक हवा से बुझ जाए, होली की ज्वाला हवा से उतर दिशा की ओर मुड़ जाए। तथा आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को दक्षिण हवा चले तो उस वर्ष खाने का अनाज मंहगे भाव बिकेगा अर्थात अन्न कम पैदा होगा। अतः यह काल के लक्षण है।

"माघ मंगल जेठ रवि, भादरवे सनि होय।
कवि कहे हे जनमानुष, बिरला जीव कोय।।"10

भावार्थ : यदि माघ मास में पॉच मंगलवार आते हो, जेठ माह में पॉच रविवार तथा भादवे माह में पॉच शनिवार आते हो तो कवि कहता है कि उस धरा पर बहुत कम ही जीव बच पायेगे, क्योकि वहॉ पर काल की छाया पड़ेगी जिससे लोग पलायन कर जायेगें।

लोक –कहावतों में सुकाल की संभावनाएँः
"सावण में सूरियो चाले, भादवे परवाई।
आसोजा में पिसवा चाले, भर भर गाड़ा लाई।।"

भावार्थः श्रावण महिने में पश्चिम की हवा तेजी से चलें और भाद्रपक्ष में पूर्व की हवा तेजी से चलें, आसोज महिने में पश्चिम की हवा चलने से उस वर्ष अनाज बहुत अधिक मात्रा में होता है। अर्थात उस वर्ष अच्छी वर्षा के साथ सुकाल दस्तक देता है।

"चिड़ियॉ झीले रेत मा, कांसी करे काठ।
ऐहरू ठांसे चढ़े, दही गले माट।।"

भावार्थः जब चिड़िया रेत में नहाती हुई दिखाई दे, कांसी के बर्तन में जंग लगना प्रारम्भ हो जाय, सॉप पेड़ों पर दिखाई देने

लगे तथा मक्खन दही के उपर गलना प्रारम्भ हो जाये तो यह संभावना व्यक्त की जाती है कि इस वर्ष बारिश होगी तथा सुकाल आने वाला है।11

"परयो पपीहिया बोले, सिंजा बोले मोर।
इन्दर बरसण आवियो, नदिया तोड़े धोर"।

भावार्थः आसाढ़ माह की नवम् तिथि को अगर आकाश में बादल नजर आये तथा बिजली चमकती हुई दिखाई देने लगे तो निश्चित रूप से अच्छी बारिश आने वाली है। किसानों को अपने बैलों एवं बीजों को तैयार कर लेना चाहिए क्योंकि यह सकेंत अच्छे सुकाल के है। इससे किसान को अच्छी फसल मिलती है।

राजपूताने के लोक–गीतों एवं लोक–कहावतों में जितनी विविधताएँ देखने को मिलती है। उतनी शायद ही किसी अन्य प्रांत में मिलें। लोक धारा अनेक प्रदूषणों के खतरे को झेलती हुई आज भी लोक–गीतों एवं लोक–कहावतों के रूप में प्रवाहित हो रही है। राजपूताना इस दृष्टि से अधिक समृद्धशाली एवं गौरवशाली है।13

लोक–गीत एवं लोक–कहावतों के माध्यम से हमें यहॉ के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। राजपूतानें में बार–बार पड़ने वाले अकाल जहॉ मनुष्य के आर्थिक जीवन को कमजोर करते हैं वही त्यौहार, विवाह जन्म उत्सव, मेले आदि में गायें जाने वाले लोकगीत यहॉ के लोगों को सामाजिक दृष्टि से सरल एवं सस्कृति को प्रकाशमान किया है। अपनी संस्कृति को लोक–गीतों, लोक–कहावतों, लोक–कथाओं में पिरोकर पूर्णरूप से संरक्षित कर लिया है।

(सहायक आचार्य)
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. लोक साहित्य– डॉ. रामप्रसाद दाधिच, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. सं. 188
2. जे. एस. नीरज एवं बी.एल. शर्मा– राजस्थान परम्परा, पृ. सं. 189
3. लोक संगीत– डॉ. भगवती लाल शर्मा, पृ. सं. 119
4. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा–नीरज शर्मा, पृ. सं. 119–120
5. डॉ. गोपीनाथ शर्मा– राजस्थान का इतिहास, पृ. सं. 487
6. भोपा लुम्भाराम सियाग (गॉव खट्टू, तहसील बायतू)– मौखिक स्वर, अनुवाद लेखक स्वंय द्वारा
7. उपर्युक्त
8. राजस्थानी दोहावली– स्व. नरोत्तम स्वामी, पृ. सं. 56
9. सोसायटी टू अपलिफट रूरल इकॉनामी– भुवनेश जैन, पृ. सं. 79
10. बही, पृ. सं. 80
11. समुन्द्र सिंह जोधा– राजस्थानी दोहावली, पृ. सं. 65
12. डॉ. नसीम, एच.एच. गौराण– राजस्थानी लोक संस्कृति एवं कायमखानी समाज।